MAH/MUL/ 03051/2012 ISSN :2319 9318

आंतरविद्याशाखीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

विद्यावार्ता™

April To June 2021
Special Issue-01

अतिथि संपादक

डॉ. संतोषकुमार यशवंतकर
डॉ.गोविंद गुंडप्पा शिवशेट्टे

❖ **विद्यावार्ता** या आंतरविद्याशाखीय बहूभाषिक त्रैमासिकात व्यक्त झालेल्या मतांशी मालक, प्रकाशक, मुद्रक, संपादक सहमत असतीलच असे नाही. **न्यायक्षेत्र:बीड**

"Printed by: **Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.** Published by **Ghodke Archana Rajendra** & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor **Dr. Gholap Bapu Ganpat**.

Reg.No.U74120 MH2013 PTC 251205

Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.
At.Post.Limbaganesh,Tq.Dist.Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell:07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com
All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors / www.vidyawarta.com

Date of Publication
01 April 2021

Vidyawarta™

International Multilingual Research Journal

www.विद्यावार्ता.कॉम®

You Tube Channel

Vidyawarta is peer reviewed research journal. The review committee & editorial board formed/appointed by Harshwardhan Publication scrutinizes the received research papers and articles. Then the recommended papers and articles are published. The editor or publisher doesn't claim that this is UGC CARE approved journal or recommended by any university. We publish this journal for creating awareness and aptitude regarding educational research and literary criticism.

The Views expressed in the published articles, Research Papers etc. are their writers own. This Journal dose not take any libility regarding appoval/disapproval by any university, institute, academic body and others. The agreement of the Editor, Editorial Board or Publicaton is not necessary. Editors and publishers have the right to convert all texts published in Vidyavarta (e.g. CD / DVD / Video / Audio / Edited book / Abstract Etc. and other formats).

If any judicial matter occurs, the jurisdiction is limited up to Beed (Maharashtra) court only.

Indexed

IMPACT 7.940 iijif FACTOR

Govt. of India,
Trade Marks Registry
Regd. No. 2611690

http://www.printingarea.blogspot.com

Editorial Board & review Committee

- **Chief Editor**
Dr Gholap Bapu Ganpat
Parli_Vaijnath,Dist. Beed Pin-431515 (Maharashtra)
9850203295, 7588057695
vidyawarta@gmail.com

- **M.Saleem**
saien Ghulam street
Fatehgarh Sialkot city
Pakistan. Phone Nr. 0092 3007134022
saleem.1938@hotmail.com

- **Dr. Momin Mujtaba**
Faculty Member,Dept. of Business Admin.
Prince Salman Bin AbdulAziz University
Ministry of Higher Education,Kingdom of Saudi Arabia, Tel No.: +966-17862370 Extn: 1122

- **N.Nagendrakumar**
115/478, Campus road,
Konesapuri, Nilaveli (Postal code-31010),
Trincomalee, Sri Lanka
nagendrakumarn@esn.ac.lk

- **Dr. Vikas Sudam Padalkar**
vikaspadalkar@gmail.com
Cell. +91 98908 13228 (India),
+ 81 90969 83228 (Japan)

- **Dr. Wankhede Umakant**
Navgan College, Parli –v Dist. Beed
Pin 431126 Maharashtra
Mobi.9421336952
umakantwankhede@rediffmail.com

- **Dr. Basantani Vinita**
B-2/8, Sukhwani Paradise,
Behind Hotel Ganesh, Pimpri,
Pune-17 Cell: 09405429484,

- **Dr. Bharat Upadhya**
Post.Warnanagar, Tq.Panhala,
Dist.Kolhapur-4316113
Mobi.7588266926

- **Jubraj Khamari**
AT/PO - Sarkanda, P.S./Block - Sohela
Via/Dist. - Bargarh, Pin - 768028 (Orissa)
Mob. No. – 09827983437
jubrajkhamari@gmail.com

- **Krupa Sophia Livingston**
289/55, Vasanthapuram,
ICMC, Chinna Thirupathy Post,
Salem- 636008 +919655554464
davidswbts@gmail.com

- **Dr. Wagh Anand**
Dept. Of Lifelong Learning and Extension
Dr B A M U Aurangabad pin 431004
Mobi. 9545778985
wagh.anand915@gmail.com

- **Dr. Ambhore Shankar**
Jalna,Maharashtra
shankar296@gmail.com
Mobi.9422215556

- **Dr. Ashish Kumar**
A-2/157, Sector-3, Rohini, Delhi -110085
Ph.no: 09811055359

- **Prof. Surwade Yogesh**
Dept. Of Library, Dr B A M U Aurangabad , Pin 431004
Cell No: +919860768499
yogeshps85@gmail.com

- **Dr.Deepak Vishwasrao Patil,**
At.Post.Saundhane, Near
Kalavishwa Computer, Tq.Dist.Dhule-424002.
Mobi. 9923811609
patildipak22583@gmail.com

- **Dr.Vidhya.M.Patwari**
Vanshree Nagar,Behind Hotel
Dawat, Mantha Road, Jalna-431203
Mobi.9422479302
patwarivm@rediffmail.com

- **Dr.Varma Anju**
Assistant Professor, Dept. of Education,
Sikkim University 6th Mile, Samdur Tadong-737102
GANGTOK - Sikkim, (M.8001605914)
anjuverma2009@rediffmail.com

- **Dr.Pramod Bhagwan Padwal**
Associate Professor,Department of Marathi
Banaras Hindu University,
Varanasi-221005.(Uttar Pradesh)
Mobi. 9450533466
[illegible]@gmail.com

INDEX

१. स्त्री – विमर्श स्वरूप एवं संवेदना ||13
डॉ. नागनाथ संभाजी वारले

२. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष में स्त्री विमर्श ! ||16
डॉ. दस्तगीर देशमुख, डॉ. शेख लतीफ

३. क्वारंटाइन उर्मिला स्त्री विमर्श के परीप्रेक्ष्य में ||23
प्रा.डॉ.अभिमन्यु न.पाटील

४. मन्नू भंडारी की कहानियों में कामकाजी नारी ||26
प्रा. डॉ. आहेर संगिता एकनाथराव

५. हिन्दी स्त्री विर्मशपर वैश्विकरण का प्रभाव ||30
प्रा. डॉ. रेखा मुळे

६. ममता कालिया की कहानियों में मध्यवर्गीय समाज की महिलाओं का यथार्थ चित्रण
डॉ.गजानन हरीराम बने ||33

७. भूमंडलीकरण : स्त्री विमर्श का वास्तव
प्रा.डॉ.दीपक विनायकराव पवार ||38

८. निर्मला पुतुल की कविताओं में स्त्री संवेदना
डॉ.ढाणकीकर शोभा नारायणराव ||41

९. हिंदी गद्य साहित्य में महिला सशक्तीकरण ||44
प्रा.दिगंबर ज्ञानोबा गायकवाड

१०. मंगला प्रसाद पुरस्कार प्राप्त काव्यत्रयी में नारी अस्मिता ||48
डॉ गरिमा जैन

११. स्त्री विमर्श के संदर्भ में 'गुड़िया–भीतर–गुड़िया' आत्मकथा का मूल्यांकन
डॉ.भगवान रामकिषन कदम ||52

१२. नारी संघर्ष की कथा–'जमाने में हम' ||55
डॉ. अनिला मिश्रा

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

३९. आदिवासी समाज और संस्कृति ||149
प्रा.डॉ. विठ्ठलसिंह रूपसिंह घुनावत

४०. रणेंद्र के उपन्यासों में चित्रित आदिवासी विमर्श |151
प्रा.डॉ.उषमवार जी.बी.

४१. आदिवासी विमर्श और रमणिका गुप्ता ||153
डॉ. देशमुख दस्तगीर सरदारमियां

४२. "रेत" उपन्यास में आदिवासी—विमर्श ||159
प्रा. डॉ वसंत माली

४३. हिन्दी नाटकों में आदिवासी विमर्श ||161
प्रा.डॉ. बालाजी बळीराम गरड

४४. 'हिन्दी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर समस्या' ||164
डॉ. संतोष विजय येरावार

४५. किन्नर विमर्श के प्रमुख उपन्यास : एक परिचय ||170
माधवराव गजाननराव जोशी

४६. तृतीय लिंगी समाज — पोस्ट बॉक्स नं.२०३ नाला—सोपारा ||174
डॉ. सुकन्या मघ्री जे.

४७. २१वीं सदी के हिंदी उपन्यास साहित्य और समाज में किन्नर विमर्श ||177
डॉ. मनिषा गंगाराम मुगळीकर

४८. ||181
डॉ. प्रिया ए.

४९. ''वृध्द विमर्श:कल और आज'' ||184
प्रा. डॉ. शेख शहेनाज अहेमद

५०. विवेकी राय की कहानियाँ और वृद्ध विमर्श ||188
शिंगाडे सचिन सदाशिव

५१. डॉ. परशुराम शुक्ल के सूचनात्मक बाल साहित्य का बौद्धिक मूल्यांकन
डॉ. माधव राजप्पा मुंडकर ||190

५२. ''वीमा नाटक में चित्रित दलित—विकलांग चेतना''
डॉ. लुटे मारोती भारतराव ||193

योगदान देना चाहिए अपने माता पिता परिवार के अन्य सदस्य जो अनपढ है, उनसे प्यार का व्यवहार करना चाहिए। आदिवासियों मे एक को षिक्षा प्राप्त होने पर वह दूसरों के प्रति घृणा करता है परिणाम स्वरूप वह खुद को पूरे आदिवासी समाज में अकेला महसूस करता है और एक दिन लक्ष्मी जैसी आत्महत्या होती है। यहीं बात विभु कुमार ने 'हवाओं का विद्रोह' नाटक के व्दारा उजागर की है। आदिवासियों को षिक्षा जरूर मिलनी चाहिए और उस षिक्षा का मूल आधार उनकी जमीन और उससे जुडी संस्कृति होनी चाहिए। अगर यह नहीं हुआ तो इन लोगों में असंतोश को बढावा मिलेगा और आदिवासी स्त्री–पुरूश नगाडे बजाते हुए इस विनाषकारी षिक्षा के खिलाफ जरूर विद्रोह करेंगे यही संदेष इस नाटक के व्दारा मिलता है।

संदर्भ :–

१) समकालीन हिन्दी नाटकों मे समाजिक चेतना / डॉ. कपिला म.पटेल/ मयूर प्रकाषन/पृश्ठ ३४
२) हवाओं का विद्रोह /विभु कुमार/ नेषनल पब्लिकेषन हाऊस / पृश्ठ ६०, ६१
३) हवाओं का विद्रोह /विभु कुमार/ नेषनल पब्लिकेषन हाऊस / पृश्ठ ७१
४) हवाओं का विद्रोह /विभु कुमार/ नेषनल पब्लिकेषन हाऊस / पृश्ठ ७५
५) हवाओं का विद्रोह /विभु कुमार/ नेषनल पब्लिकेषन हाऊस / पृश्ठ ४४

❑❑❑

44

'हिंदी उपन्यासों में चित्रित थर्ड जेंडर समस्या'

डॉ. संतोष विजय येरावार
हिंदी विभाग प्रमुख
(देगलूर महाविद्यालय, देगलूर
ता.देगलूर जि. नांदेड)

****

हिन्दी उपन्यास नें भारत के वंचित, शोषित, पिडित और उपेक्षित वर्ग को गंभीरता और यथार्थता से अभिव्यक्त किया है। इसका प्रमाण दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, स्त्री विमर्श और किसान विमर्श हैं।दलित, किसान, आदिवासी, और स्त्री संवेदना, मानसिकता, संत्रास, इनकी सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, शैक्षिक एवं राजनीतिक स्थिति को उघाडा है। वंचित वर्ग को उचित न्याय देने का प्रयास हिन्दी उपन्यास साहित्य ने किया है। इसी कडी में किन्नर विमर्श भी आता हैं।. किन्नरों के जीवन में व्याप्त विकृतियों, विसंगतियों, विषमताओं और विडंबनाओं को हिन्दी उपन्यास में अभिव्यक्त किया हैं। किन्नरों के जीवन में व्याप्त समस्या को ईमानदारी से उघाडने का प्रयास हिन्दी उपन्यास साहित्य ने किया है।नीरजा माधव कृत 'यमदीप', महेंद्र भीष्म कृत 'तीसरी ताली' निर्मला भुराडिया कृत 'गुलाम मंडी', चित्रा मुद्गल कृत 'पोस्ट बॉक्स नं. २०३, और 'नाला सोपारा' पंकज बिष्ट कृत 'पंखवाली नाव' आदि महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। किन्नर जीवन में व्याप्त शोषण, पीडा, त्रासदी, उपेक्षा, तिरस्कार, घृणा, और संघर्ष को हिन्दी उपन्यासकारों ने उघाडा है। किन्नरों के ज्ञात–अज्ञात पहलुओं को और उनकी मानसिकता को उपन्यास में वानी प्रदान की गई हैं।

सामान्य जनमानस का किन्नरों के प्रति घृणा और तिरस्कार का भाव होता है जिस कारणकिन्नरों

के जीवन में मात्र पीडा ओर उपेक्षा आती हैं। हालाकी किन्नर होना या ना होना किसी के बस में नही हैं। किन्नर होना यह दोष ना माता — पिता का हैं ना ही किन्नरों का परंतू समाज के विकृत मानसिकतानें उन्हें गहरे अंधकारमई खाई मेंढकेल दिया हैं। समाज कि इसी घृणित और संकुचित धारण के कारण किन्नरों को अपना संपूर्ण जीवन तिरस्कार, अभाव और प्रताडना में बिताना पडता हैं। समाज उनको स्वीकार करने की अवस्था में नही हैं समाज के इसी नकारात्मक विचारधारा को बदलने का प्रयास हिन्दी उपन्यासकारों नें किया हैं। समाज में किन्नरों की दशा और दिशा के प्रति जागरूकता लाने के उद्देश से किन्नरों की वास्तविकता को उघाडने का कार्य हिन्दी उपन्यासकार करते हुये दिखाई देते है।किन्नरों के प्रति घृणा का ही परिनाम हैं कि जन्म देने वालें माता — पिता भी तिरस्कार की दृष्टि सें अपने बच्चों को देखते हैं। समाज जिसप्रकार किन्नरों को आभिशाप मानता हैं उसी प्रकार का भाव भी परिजनों का होता है। परिवार के सारे सदस्य अपने आप को अपमानित महसूस करते हैं। जिस कारण समाज और परिवार सभी से मात्र घृणा और तिरस्कार ही किन्नरों के हिस्सें में आता है। परिवार की इसी मानसिकता कों महेंद्र भीष्म ने, 'मै पायल' उपन्यास में उघाडा हैं। पायल के जन्म के बाद उसके पिता को यह ज्ञात होता हैं की पायल एक किन्नर के रूप में पैदा हुई है तों वह उसका चेहरा भी देखना पसंद नही करते उसे सदैव प्रताडित करते रहते। अपनी सारी भडास पायल पर निकालते थें। पायल कहती है, ''जब कभी पिताजी दारू के नशे में कोसतें गाली देते, ये जुगनी! क्षत्रिय वंष में कलंक पैदा हुई हैं, साली हिजडा है''१ किन्नरों के हिस्से में मात्र पीडा और पीडा ही हैं।

समाज की किन्नरों के प्रति विक्षिप्त मानसिकता के कारन किन्नरों को न ठीक से शिक्षा मिल पाती हैं न ही रोजगार। समाज के अधिकतर क्षेत्र उनके लिए बहिष्कृत हैं। रोजगार अभाव के कारन उनका जीवन आर्थिक विपन्नता से ग्रस्त हो जाता है। किन्नरों को अपना पेट भरने के लिए ताली बजाकर भिक माँगना, या देहव्यापार करना पडता हैं। समाज का एक बहूत बडा तबका भी किन्नरों की तरफ वासना की दृष्टि से देखता हैं। 'यमदिप' उपन्यास में मजबूरन देहव्यापार करनेवाले किन्नरों से महताब गुरू कहते हैं, ''देखो, नाज चोरी—छिपे यहाँ जो धंधा चल रहा है उसका फल तो तुम देख ही रही हो। जुबैदा चल बसी और अब सोबराती की बारी है— अब चला जाय कि तब। इसीलिए बस्ती में हम सबको मना करते रहे कि जिस करम को करने लायक अल्ला ने ही हमें नहीं बनाया तो उसके साथ कोई जोर—जबरदस्ती मत करो। लेकिन कौन सुनता है? कभी रेल्वे स्टेशन पर मोर्चा खाए पुराने डिब्बे में से पुलिस वाले के साथ कोई निकलता है तो कभी शराबियों — कनाडिंयो के साथ हमारा कोई बिरादार पकडता है। दस बीस रूपयों के लिए इतना गंदा काम करने की क्या जरूरत?''२

किन्नरों को अपने शरीर की भुख मिटाने के लिए और कुछ पैसो के लिए अपने शरीर को बेचना पडता हैं जिस कारन वे अनेकों यौन बिमारियों से पिडित हो जाते हैं। अनेको किन्नरों को तो अपने प्राण भी गवाने पडते हैं। किन्नरों के सामने सबसे गहन प्रश्न रोजगार का ही होता हैं। किन्नरों को समाज, परिवार और व्यवस्था स्विकार नहीं करती हैं। जिस कारन लोग घरों में जानवरों का पालन—पोशन करेंगे लेकिन किन्नरों का नहीं। किन्नरों के प्रति समाज के घृणित और विकृत मानसिकता के कारन किन्नरों को सामान्य जीवन व्यतित करना संभव नही होता। पशु से भी बत्तर व्यवहार उनके साथ किया जाता है। जन्म देने वाले माता पिता भी उसे बोझ मानकर अस्विकार करते हैं।

किन्नरों के जीवन में मात्र उपेक्षा, तिरस्कार और अपमान है। समाज द्वारा सबसे अधिक उपेक्षित वर्ग अगर कोई है तो वह किन्नर वर्ग है। नाजबीबी के माता—पिता से महताब गुरू का संवाद किन्नरों की सामाजिक स्थिति को अभिव्यक्त करता है। ''आप इस बस्ती में रह नहीं सकते बाबूजी, और

अपनी बेटी को अपने साथ रख भी नहीं सकते .. . दुनिया में बदनाम और हैसी हैसारत के डर से। हिजडी के बाप कहलाना न आप बर्दाश्त कर पाएंगे और न आपके परिवार के लोग लूली लंगडी होती यह, कानी कोतर होती, तो भी आप इसे अपने साथ रख सकते थे ...... इसीलिए इसे अब इसके हाल पर छोड दीजिए। यही उसका भाग्य था।''३ हिजडो के प्रति समाज के इसी दृष्टिकान के कारन हिजडों को दर—दर की ठोकरे खाने को मजबूर होना पडता है।

'किन्नर कथा' उपन्यास की तारा को भी लगता है की, ईष्वर नें उन्हे अधूरा देह देकर अभिषप्त जीवन जीने के लिए मजबूर किया है। तारा सोना के बारें में कहती है! ''क्या नन्ही सोना जैसी बच्ची के शेष जीवन के लिए प्रकृति का अभिशाप नहीं है, इस निर्दोश का जीवन अब उसी की तरह बीतने वाला है। घर, परिवार, समाज से बहिश्कृत, तिरस्कृत और त्रासदी से लिप्त हुए। जब तक जीवन है, त्रासदियाँ उनके साथ हैं, वह जो न नर है, न नारी है, है तो सिर्फ और सिर्फ एक 'हिजडा' यही उसकी पहचान है, यही कटु सत्य है।''४ किन्नरों की जीवनभर पीडा भोगने की वास्तविकता को उपन्यासकार ने उघाडा है।

'राजा जगतराज' तो सोना को मारने का तक का हूक्म देता है। किन्नरों का अपने घर में पैदा होना किसी को भाँता नही हैं। कोई उसे घर से घदेड देतेहै तो कोई समाज के तानों से बचने के लिए अपने हि किन्नर संतान को मार देते हैं। किन्नरों के प्रति समाज के अमानवीय सरोकार के कारन समाज का कोई भी तबका उनको स्वीकार नहीं करता हैं। नाँच—गाना करना, भीख माँगना, वेश्या व्यवसाय करना तथा रेल्वे और बसस्थानकों पर लाचारी का जीवन व्यतित करना यह उनके जीवन के अनिवार्य घटक बन जाते है। हिजडो के प्रति तिरस्कार भाव को अभिव्यक्त करते राजा जगतराज पंचम सिंह को अपनी बेटी सोना का वध करने का आदेश देते है। पंचम हत्या करने से मना करता हैं तब राजा जगतराज कहता है!, ''अरे जब हमने मोह ममता नहीं देखी, तो तुम काय डिग रये, अपने बुंदेला खानदान का नाम डुबा दे क्षत्री वंश में हिजडा। का ऊ हिजडा कहां पाले—पोसे। अरे आज नही तो कल, जब सबके सामने जा बात आ जेहे कि हमाई संतान हिजडा है, बुंदेला खून हिजडा पैदा करता हैं तो का गत हुई हमाई, समझत काय नईयूया तुम इती सी बात।''५

राजा के जबरन हत्या करने के आदेश के कारन पंचम सिंह सोना का वध करने हेतूउसे लेकर जाता हैं परंतू सोना की मासुमियत उसे हत्या के पाप से रोकती हैं। पंचम सिंह सोना को आश्रम लेकर जाता हैं वहाँ तारा नाम का हिजडा सोना को लेकर जाता हैं। समाज की घृणित मानसिकता, पुरूषी अहंकार आहत न होने की भावना और लोकभय के कारन मासुम बच्ची के जीवन में पीडा मात्र शेष रहती है। सोना को बेवजह हिजडा होने के कारन अपने परिवार से बिछडना पडता है। तारा को भी परिवार वाले घर से निकाल देते हैं। तारा और सोना दोनों को परिवार वाले प्रताडित कर बेदखल कर देते हैं। ''उसके हिजडा जन्म लेने से उसके माता—पिता की क्या गलती थी? हिजडा रूप या उसकी गलती है? फिर ईश्वर का तमाचा उस पर ही क्यों पडा? ईश्वर ने उसके साथ ऐसा क्यों किया? क्यों किया उसने उसके और उस जैसे अन्य हिजडो के साथ? क्यों बनाया उन्हें ईश्वर ने अधूरा और अपमानित रहने के लिए अभिशप्त कर दिया? क्या यह ईश्वर द्वारा किया अन्याय नही? पाप नहीं है? क्या हम ईश्वरीय पाप की परिणति है? प्रकृति का क्रूर मजाक हमीं है हम सब ? घर परिवार? समाज से बहिश्कृत, तिरस्कृत और त्रासदी लिए हुए। जब तक की जीवन है, त्रासदियाँ उनके साथ है, वह जो न नर हैं, न नारी हैं, है तो सिर्फ और सिर्फ एक हिजडा, यही उसकी पहचान हैं, यही कटु सत्य है।''६ किन्नरों के जीवन की वास्तविकता को महेंद्र भीश्म जी ने अत्यंत गंभीरता से उघाडा हैं। 'मै पायल' उपन्यास की पायल भी समाज और परिवार की प्रताडना से आहत होकर आत्महत्या करने का निर्णय लेती है। पायल के

पिताजी पायल हिजडा होने के कारन इतना मारते हैं कि वह मरनासन्न अवस्था में पड़ जाती है।

समाज के प्रताडना का शिकार मात्र हिजडा नहीं होता हैं तो हिजडें का संपूर्ण परिवार भी होता है। सारे लोग परिवार के सदस्य को हिन भाव से देखते है। परिवार के पुरूष वर्ग के पूरूषत्व पर प्रश्नचिन्ह लगाया जाता हैं, जिस कारन पुरूष अपना सारा रोश परिवार के महिलाओंपर निकालते हैं। उन्हे गंदी—गंदी गाली गलोच करना, मारना, और प्रताडित करना सामान्य बात बन जाती हैं। पायल का बडा भाई जब अपने दोस्तों के साथ शराब पिता हैं वहाँ उसका अपने दोस्तों के साथ झगडा हो जाता हैं। सारे दोस्त उसे हिजडे का भाई, बडा आया मर्द कहकर उसकी अवहेलना और अपमान करते हैं। जिस कारन वह घर पर आकर पायल को गंदी—गंदी गाली देता हैं। पायल घर के सारे लोगों के व्यवहार और समाज के घृणित मानसिकता के कारन आत्महत्या का निर्णय लेती है। जिससे उसे लगता हैं मेरे साथ मेरे परिवार के लोगों की भी पीडा समाप्त हो जाएगी। किन्नरोंके समस्त परिवार को समाज की अवहेलना मिलती हैं जिस कारन किन्नरों के सामने आत्महत्या या घर से पलायन कर भीख माँगने के अलावा तिसरा पर्याय नहीं होता हैं। हिजडे के जीवन में आनेवाली सारी पीडा, त्रासदी, संत्रास और अभाव का कारन केवल समाज की घृणित और विक्षिप्त धारना है। ''मैंने तय कर लिया था घर के बाहर के रास्ते में अगले मोड पर बने कुँए में छलांग लगा दूँगी। न रहेगी यह हिजडा देह न रहेंगे वे ताने जो मुझे और मेरे परिवार को मेरे कारण मिल रह थे। पिताजी मानसिक कश्टविहीन हो जाएँगे। मेरी वजह से अम्मा और बहनों को जो संताप और दुःख उठाने पडते हैं, उससे वे मुक्त हो जाएंगे।''७

पायल कुँए मे आत्महत्या करने के लिए जाती है परंतु भीड के कारन वह कुँए में कुदने का निर्णय त्याग कर ट्रन के नीचे आँकर आत्महत्या करने हेतू पटरी की ओर दौड पडती हैं। परंतू पायल ट्रेन के सामने आने का साहस जुटा नही पाती हैं। और वह साहस जुटाकर घर से पलायन कर ट्रेन में चढ जाती हैं। ट्रेन में चढने के उपरांत एक प्रौढ़ आदमी पायल के साथ गंदी हरकते करता है। पायल जैसे अनेंको स्त्रीयों के साथ समाज का एक बडा तबका अपनी वासना की तृप्ती करने की कामना रखता हैं। वासनांध मानसिकता के कारन अनेकों स्त्रीयों का यौन—शोषन का शिकार होना पडता हैं। पायल के शरीर के साथ वह आदमी खेलने लगा। उसे वह जबरन बाहों मे भर लेता है और चुमता, भी हैं और पायल यह सब सहती हैं। समाज के तिरस्कार, घृणा और पीड़ा से आहत होकर वह आत्महत्या करने निकलती हैं और यौन उत्पीडन की शिकार हो जाती हैं। ट्रेन जब गंगा नदी के पुल से गुजरती हैं तो फिर से उसके मन में गंगा नदी में कुँदकर आत्महत्या करने का विचार जन्म लेता हैं परंतू फिर पायल नदीं में कूँदने का साहस नही कर पाती हैं। पायल की पीडा के माध्यमसे 'महेंद्र भीष्म' जी ने किन्नरों के जीवन यातना कोअभिव्यक्त किया हैं।

किन्नरों के साथ समाज का दूजाभाव किन्नरों को पलायन और आत्महत्या के लिए प्रेरित करता है। पलायन के कारन पायल भी बेसहारा हो जाती हैं और उसके अकेलेपन का फायदा वासनांध पुरूष उठाते हैं और उसका यौन शोषन— करते है। पायल के साथ अनेकोबार यौन उत्पिडन होता हैं पहली बार ट्रेन में उसका एक आदमी यौन शोषन करता हैं।, उसे बाहों मे जबरन भरता है, उसे चुमता हैं, उसकी जाँघा और छाती को छूता हैं, और उसके तरफ पैसे फेककर उसे ट्रेन के बाथरूम में आने को कहता हैं। पायल जैसे तैसे उस वासनांध आदमी से बच निकलती हैं। पायल का प्लेटफॉर्म पर एक पुलिसवाला पायल का यौन शोषन करता हैं। सोई हूई पायल के गालो और छाति को टटोलता है। उसके उभरे अंगो के दबोचता हैं। यह सबसे पायल घबराकर उठ जाती है और पुलिसवाला पायल को घसिटकर अंधेरे में ले जाता हैं। ''वह मुझे घसीटकर प्लेटफॉर्म की दूसरी और ले आया जहाँ पर रोशनी कम थी। ...क्या सोचने लगी उसने मेरी बाई छाती बेरहमी से मसल दी। मै दर्द से रोने लगी, उसने

मुझे चिपका लिया। छोडो ना लगता है। ... अरी चुपकर ... चुपकर नही तो ये डंडा देख रही है न ...घुसेड दूगा तेरी में। ...वह डंडा दिखाते बोला, मैं भय से काँपने लगी और खडी हो गई। ...बेठ जा ...कानूनी काम कर रहा हूँ। ...सच बता तू घर से भागकर आई है न। बह लगभग पुचकारते हुए बोला। ...नहीं झूठ बोलती है हरामखोर। सच बता घर से भागकर आई है न। अब आई न लाईन पर। वह मुझसे सटकर बैठ गया और इधर–उधर छूते मेरा हाथ अपने घोडे(लिंग) पर ले गया। ...दबा इसे दबा ...जोर से पकड। मैं डर गई और उसके घोडे को दबाने लगी ...उसने मेरी छातियाँ सहलानी शुरू कर दी। वह मुझे चिपकाये चूमता जा रहा था और चौकन्ना हो चारों तरफ देख भी रहा था। ...मेरे कानों के पास फुसफुसाते बोला, देख थोडा मोटा है ...पर तुझे तकलीफ नहीं होगी। चल मेरे साथ तुझे मीठा खिलाऊँगा। वह चौकन्ना और उत्तेजित था उसकी साँसे तेज–तेज चलने लगी थीं। चेहरे पर कामुकता चढ़ आई थी। उसके मुँह से बदबूदार लार टपक रही थी। ... चल उठ ...मैं नही उठी ...उसने बेरहमी से मेरी जाँघों के बीच डंडा लगा दिया। मैं तकलीफ से बिलबिला उठी, मेरी आँखों से आँसू निकल आये।''८ पायल का तिसरी बार यौन शोषण करने का प्रयास प्रमोद करता है।, ''मैंने देखा मेरी बगल में कोई लेटा है और मुझे अपने में समेटने की पूरी तैयारी में जुटा है। मैं एकाएक चौंक पडी, मैंने उठना चाहा पर, वह मेरे ऊपर आ गया।। मैं उठ न सकी। ... कौन है? दूर हटो! मैं जोर से चीखी। मैं जितनी जोर से चीखी उतनी ही मजबूती से उसने मुझे अपनी गिरफ्त में ले लिया। घुप्प अंधेरे के कारण मैं देख नहीं पा रही थी, पर समझ गयी थी कि यह चौकीदार प्रमोद है। हाँ, वही था। ...प्रमोद! दूर हटो, छोडो मुझे। मैं पुनः चिल्लाई। ...पडी रह मुझे पहले से ही शक था कि तू लड़की है ...आज देख भी लिया। उसने मेरी छाती मसलते हुए मेरे होठों पर मुँह मारा उसकी मूँछो की चुभन और बीडी की दुर्गंध ा महसूस हुई। ...प्रमोद! मुझसे बुरा कोई न होगा, छोड दे मुझे दादा से शिकायत करूँगा। ...करूँगा कि करूँगी, उसने मेरे बाए उरोज को अपनी मुठ्ठी में भरते कहा। ...छोड साले हरामी, मैं चीख रही थी। ...वह मुझसे बलिष्ठ था, उम्र में बडा था। वह मेरी शर्ट का बनियान सहित एक झटके में हटा चुका था। उत्तेजना के वशीभूत इस समय प्रमोद के सिर पर शैतान सवार था। वह एक पल के लिए मेरी कमर के पास झुका, उसके दोनों हाथ मेरे अंडरवियर पर थे। एक इसी मौके ने मुझे संभलने का समय दे दिया और मैने अपनी सारी शक्ति समेटकर, दोनों हाथ बेंच पर मजबूती से टिकाकर एक जोरदार लात प्रमोद के जांघो के मध्य दे मारी।''९

नाला सोपारा उपन्यास में भी विधायक का भतीजा और उसके दोस्त पूनम को अपनी वासना का शिकार बनाते हैं और उसके साथ निर्मम बलात्कार करते हैं जिससें उसका सारा शरीर लहूलूहान हो जाता है। पूनम को नृत्य करने के लिए जब विध ाायक के द्वारा बुलाया जाता हैं। वह कपडे बदलने के लिए कमरें में जाती हैं तो विधायक का भतीजा और उसके दोस्त पूनम का बलात्कार करनें के लिए कमरें मे जबरन प्रवेश करते है। ''पूनम कहती है।, कपडे बदलने है। वे कमरे से बाहर जाएँ। भतीजे ने पूनम जोशी को दबोच लिया। कहते हुए, वह डरे नहीं। कपड़े वे बदल देंगे उसके। बस? वह उनकी ख्वाहिश पूरी कर दे। हिजड़ों का गुप्तांग नहीं देखा है उन्होंने। कैसा होता है गुप्तांग? विदेशों में हिजड़े होते नहीं हैं, ऐसा नहीं है। अनुमान लगाना मुश्किल है वहाँ। सामान्यजनों के बीच हिजड़ा है कौन? खामोशी से वह उन्हे अपना गुप्तांग दिखा दे तो वह देखकर चुपचाप खाना खाने निकल लेंगे। ...छटपटाती, लात घूँसों से परे धकेलती पूनम जोजी ने स्वयं को उनसे मुक्त करने की कोशिश की। बहशियों ने उठाकर झुलाते हुए उसे बेरहमी से फर्श पर चित्त पटक दिया। मुँह में उसके ठूँस दी सतरंगी किराये की चुनरी। उसके विवश पैने दाँतों का सामना उन्होने उसके रसील होंठो को बारी–बारी से कुतर कर किया। दो ने झटके से उसका चूडीदार सलवार खींच उसकी कुहनी तक चूड़ियाँ भरी कलाईयों को

सूर्य नमस्कार की मुद्रा में सिरहाने बाँध दिया। घेरे दार कमीज को उतारने की बजाय उसे चीरना आसान लगा एक को। दो ने टाँगों को उठाकर चीरने वाले अंदाज में फैला दिया। धत्त साआला... इसके ता एक छेद भर है? विधायक का लाडला बिल्लू भतीजा चीखा। फिर चीखा। मोबाईल दो अपना कोई। तस्वीर खींचूँगा। टाँगे कसे रखो। दर्शक बने एक ने छेद का फोकस करते बिल्लू के सिर पर चपत दी। घोंचू, छेद दिखाई दे रहा, चूजे सी कसी छातिया नहीं दिख रहीं? अमेरिकी बालाओ की भी नहीं होंगी ऐसी छातियाँ। उसी ने पैंट खोलनी शुरू कर दी। दूसरे ने टोका। रूक बे छेद चौडा करते हैं। चिलम के फुक्कड़, कैसे करेंगे। गर्दन घुमा। देख, ड्रेसिंग टेबिल पर किसी की झूटी प्लेट पड़ी हुई है उठा ला छुरी—कांटा। विधायक जी के बिल्लू भतीजे ने छेद का ऑपरेशन शुरू कर दिया। चाकू काँटा मुस्तैद हो आए। फिर तीसरे ने पैंट खोल ली। फिर चौथे ने पैंट खोल ली। विधायक जी के बिल्लू भतीजे ने भी पैंट खोल ली। ...दीमक की आडी तिरछी रेंगती बाम्बियां लहू की नदियों में बदल चुकी थी। पाश्विकता का नृशंस नाच चरम पर पहुँचकर बारी—बारी स्खलित हो गया।''१०पूनम के साथ विधायक और उसके मित्र पशू से भी बत्तर काम करते है। इसी बासनांध क्रूर मानसिकता के कारन पूनम का संपूर्ण जीवन बर्बाद हो जाता हैं।

मैं भी औरत हूँ उपन्यास की रोशनी, मैं पायल उपन्यास की पायल हो या'नाला सोपारा' उपन्यास की पूनम हों अधिकतर किन्नरों का बलात्कार और यौन शोषन तथाकथित सभ्य समाज के लोगों के द्वारा किया जाता हैं। हिन्दी साहित्य के उपन्यासें के द्वारा किन्नरों के जीवन की वास्तविकता को उपन्यासकारों ने उघाडा हैं। किन्नरों के प्रति समाज का नकारात्मक दृष्टिकोण, किन्नरों की मानसिक प्रताडना, किन्नरों का होनेवाला सहज लैंगिक शोषन, किन्नरों के जीवन में व्याप्त शोषण, उपेक्षा, तिरस्कार, घृणा और संघर्ष आदि को संवेदना के साथ उघाडा हैं।किन्नरों को समाज के विकृत मानसिकता का शिकार होकर अपना संपूर्ण जीवन अभावों में किस प्रकार जीना पडता हैं इस वास्तविकता को भी अत्यंत प्रभावी रूप से उजागर किया हैं। जो पाठक कों किन्नरों के प्रति अपने दृष्टिकोन को बदलनें के लिए बाध्य करता है। पलायन, बलात्कार, लैंगिक शोषन, विस्थापन, बेरोजगारी, वेश्यावयवसाय, आर्थिक विपन्नता, सामाजिक प्रताडना, मानसिक प्रताडना, पारिवारीक द्वेष, पुरूषी अंहकार से आहत मानसिकता, किन्नरों के प्रति लोगों का दूशित और पूर्वग्रह पूर्ण रवैया, किन्नरों को व्यवस्था द्वारा प्राप्त अभिशप्त जीवन, आदि विभिन्न विषयों को हिन्दी उपन्यासकारों ने वाणी प्रदान कर सामान्य जनमानस को सजग करने का सराहनीय कार्य किया हैं।

संदर्भ सूची

१.महेंद्र भीष्म, मै. पायलपृ.सं.२४
२.नीरजा माधव, यमदीप—पृ.सं.२८
३.वही —पृ.सं.९३
४.महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा पृ.सं.१३२.
५.महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा पृ.सं.२७
६.वही — पृ.सं.५१
७. महेंद्र भीष्म, मै. पायल पृ.सं.३९
८. वही — पृ.सं. ४८
९. वही — पृ.सं. ८३—८४
१०. चित्रा मुद्गल, नाला सोपारा, पृ.सं.४९

□□□

Principal
A.V. Education Society's
Degloor College Degloor